Vol II Issue IV Oct 2012

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidiciplinary
Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 4, Oct 2012
ISSN:-2231-5063

Available on all social networks
citeulike

ORIGINAL ARTICLE

GRT

मैथिली पत्रकारिता का स्वर्णीम काल

संदीप कुमार[1] , अख़्तर आलम[2]

शोधछात्र[1], शोध निर्देशक[2]
संचार एवं मीडिया अध्ययन केन्द्र
महात्मा गांधी अंतराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय,
गांधी हिल, वर्धा (महाराष्ट्र) भारत

सारांश :

मैथिली पत्रकारिता की शुरूआत तो 1905 में ही हो गई, परन्तु इसे वास्तविकता के धरातल पर आते–आते काफी लम्बा समय लगा। पहली पत्रिका की शुरूआत तो जयपुर से हुई परन्तु 'मिथिला मिहिर' (1909) पहली पत्रिका बनी जो मैथिली की धरती से 'दरभंगा' से निकलनी शुरू हुई। परन्तु जब इसे दूसरी पारी के रूप में मैथिली विद्वान 'सुधांशु 'शेखर' चौधरी' ने अपने संपादन में पुनः इसका प्रकाशन 'मिथिला मिहिर' (साप्ताहिक) के रूप में किया तो इसे मैथिली पत्रकारिता के स्वर्ण युग के रूप में याद किया जाता है। इसने मैथिली पत्रकारिता के क्षेत्र में विविध आयामों द्वारा जो योगदान दिया वह अविस्मणिय है। अतः 'मिथिला मिहिर' (साप्ताहिक) के काल को (1960–1984) को मैथिली पत्रकारिता का स्वर्णीम काल माना जाता है।

प्रस्तावना :

जैसे ही मैथिली की बात आती है तो हम सभी के दिमाग में मैथिली की बोली और उसकी लोकलुभावन संस्कृति ही सामने आती है। पत्रकारिता की बात तो दिमाग में दूर–दूर तक आती ही नहीं। यह बात सिर्फ मैथिल क्षेत्र से बारह रहने वालों की नहीं है बल्कि मैथिली क्षेत्र के लोगों के साथ भी लागू होती है। मैथिली क्षेत्र की वर्तमान पीढ़ी पर वैश्वीकरण इस कदर हावी हो चुकी है कि वे तथाकथित हिंदी पत्रकारिता या फिर अंग्रेजी के बारे में सोचते और उसकी ओर आर्कशित होते हैं। परन्तु अपनी क्षेत्रीय पत्रकारिता यो यूँ कहे उनकी अपनी भाशाई पत्रकारिता उन्हें रास नहीं आती है। कारण कहीं न कहीं उनके ऊपर बाजारवाद का हावी होना और अपनी भाशाई पत्रकारिता का व्यवसायिक न लगना भी है।

अभी हाल में ही मैथिली पत्रकारिता ने आने सौ वर्श का सफर पूरा किया है। सौ वर्श का नाम सुनते ही हम सभी के दिमाग में एक ही प्रश्न उठता है कि क्या सचमुच ऐसा हुआ है ?हिंदी पट्टी के कुछ लोगों को तो आप यह भी कहते या सोचते हुए पा सकते हैं कि क्या मैथिली में भी पत्रकारिता होती है या हुई है ?

तो इसका एक ही जवाब है जी हाँ पत्रकारिता केवल हिंदी या अंग्रेजी में ही नहीं बल्कि मैथिली में भी हुई है और होती है।

''मैथिली पत्र–पत्रिका का सूत्रपात वैसे तो 1901 ई0 में ही हो चुका था, जब मुजफ्फरपुर(बिहार) निवासी अयोध्या प्रसाद खत्री ने (जो खड़ी बोली के तत्कालीन महारथियों में सके एक थे) 'तिर्हुता पत्र' निकालने का मानसिक संकल्प लिया था।''[1] वे एक साथ तीन पत्र निकालना चाहते थे, 'खड़ी हिन्दी, अदालती हिन्दी और तिरहुत'। उन्होंने तो आपने इस मानसिक संकल्प को वास्तविकता के धरातल पर लाने का शुरूआत भी कर दी थी और 'तिरहुत ओर खड़ी हिन्दी' में पत्र निकालने का आदेश भी प्राप्त कर लिया था। परन्तु उनके असमय देहान्त के कारण उनका यह सपना यर्थात का रूप नहीं ले पाया। मैथिली समाज और पत्रकारिता के लिए इसे दुर्भाग्य ही कहा जाएगा की जो मैथिली इतिहास की पहली पत्रिका सामने आयी, वह भी मैथिली मिट्टी और मैथिली संस्कृति से दूर जयपुर से निकली 'मैथिली हित साधन' (1905)। इसके संपादक थे 'विद्यावाचस्पति मधुसुदन झा', जिन्हें 'मैथिली पत्रकारिता का जनक' भी कहा जाता है। पर इस पत्र का भी उद्देश्य मैथिली पत्रकारिता का विकास करना नहीं था वरन इस पत्रिका को इन्होंने उस समय के महाराज रामेश्वर सिंह के कहने पर प्रवासियों मैथिलों को सूत्रबद्वकरने के उद्देश्य से निकाला। शायद इसी को ध्यान में रखकर उन्होंने जिस संस्थान के माध्यम से इसका प्रकाशन किया उसका नाम 'मैथिली हित साधन समिति' रखा था। यह अपने उद्देश्य में कितना सफल हुई यह तो इतिहास की बात है परन्तु पत्रिका केवल तीन वर्शों तक ही अपने आस्त्वि को बनाये रखा पायी।

''इसके बाद दूसरी मासिक मैथिली पत्रिका छपी 'मैथिली मोद'(1905 श्रावणी पूर्णिमा), यह भी अपनी मैथिली संस्कृति और समाज से दूर बनारस से। इसके संपादक थे म. म. मुरलीधर झा।''[2] परन्तु सबसे दुखः की बात यह थी की इसकी भाशा आरंभ में पूर्णतः मैथिल न होकर 'मैथिल–हिन्दी' थी ओर यह स्थिति लगातार कई वर्शों तक बनी रही। बाद में यह पूर्णरूपेण मैथिल भाशा में परिवर्त्तित हो गई। अपने 16 वर्ष के जीवन काल में अपनी टिप्पणियों, आलोचनाओं, विषयों में व्यापक विभिन्नता, व्यंग्यात्मक शैली और अपनी भाशा के कारण पाठकों के बीच इसकी अच्छी पैठ बनी रही।

''इसके बाद तीसरी पत्रिका जो मैथिली इतिहास की सबसे लंबे काल तक प्रकाशित होने वाली पत्रिका थी 'मिथिला मिहिर'(1909) का प्रकाशन इसकी अपनी संस्कृति और मिट्टी में 'दरभंगा' से हुआ। इसलिए इसे मिथिला से प्रकाशित 'प्रथम मैथिली पत्र' होने का गौरव प्राप्त है।''[3] 'मिथिला मिहिर' का काल मैथिली पत्रकारिता में बहुत ही महत्त्वपूर्ण था। इसका आरंभ 1909 में मकर संक्रान्ति के दिन हुआ था। आरंभ में यह एक मासिक पत्रिका थी। इसके प्रथम संपादक पं.विष्णुकान्त झा 'शास्त्री' थे। आरंभ में इसकी प्रकाशन भाशा भी हिन्दी ही थी और अंग के रूप में इसमें मैथिली का प्रयोग किया जाता था। परन्तु जल्द ही इसने हिन्दी को पूरी तरह त्याग कर मैथिल को पूर्ण रूप से अपनी प्रकाशन की भाषा बना लिया।

Please cite this Article as : *अख़्तर आलम , संदीप कुमार , मैथिली पत्रकारिता का स्वर्णीम काल* **: Golden Research Thoughts (Oct. ; 2012)**

मैथिली भाषा एवं साहित्य को समृद्ध और लोकप्रिय बनाने में उस समय की मैथिली के बाकी पत्रिकाओं ने भी योगदान दिया, परन्तु 'मिथिला मिहिर' ने जो योगदान दिया वह आज भी स्मरणिय है। 1909 से 1954 तक यह दरभंगा से मासिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित होती रही। इस दौरान इसके संपादक मंडल में 'विष्णुकान्त झा 'शास्त्री', पं. योगानन्द कुमार, पं. जनार्दन झा 'जनसीदन', पं. कपिलेश्वर झा 'शास्त्री', सुरेन्द्र झा सुमन, एवं सुधांशु शेखर चौधरी' आदि जैसे मैथिल साहित्यकार और विद्वान इसमें शामिल हुएं। ''दरभंगा से प्रकाशित 'मिथिला मिहिर' के माध्यम से 'मुन्शी रघुनन्दन दास, भोला लालदास, भुवनेश्वर सिंह भुवन, प्रो. हरिमोहन झा, आरसी प्रसाद सिंह, कुमार गंगानन्द सिंह और मणिपद्म' आदि जैसे कितने ही रचनाकार मैथिल भाशा–साहित्य के पटल पर अवतरित हुए। जिनके अवदान से मैथिली भाषा साहित्य गौरवान्तित हुआ।''[4]

1936 में सुरेन्द्र झा 'सुमन' के संपादन काल में 'मिथिला मिहिर' का एक अंक 'मिथिलांक' नाम से निकला जो पूरी तरक मिथिला की संस्कृति और साहित्य को संपर्पित थी। यह अंक 'मिथिला मिहिर' के इतिहास में 'मील का पत्थर' था। इस अंक के प्रकाशन के साथ ही 'मिथिला मिहिर' की लोकप्रियता मैथिली समाज एवं प्रवासी मैथिली समाज में काफी बढ़ गई। इस विशेशांक की चर्चा आज भी मैथिली के विभिन्न विद्वानों/साहित्यकारों द्वारा उनकी चर्चा/परिचर्चा में की जाती है।

सन् 1954 में 11 नवबंर के अंक प्रकाशन के साथ किन्हीं कारण वश इसका प्रकाशन बंद हो गया। ''परन्तु इसकी लोकप्रियता और मैथिली समाज में इसकी साख को देखते हुए मैथिली विद्वान 'सुधांशु 'शेखर' चौधरी' ने अपने संपादन में पुनः इसका प्रकाशन (1960–1984) पटना से साप्ताहिक पत्रिका के रूप में किया। 'सुधांशु 'शेखर' चौधरी' के संपादन मंडल में उस समय 'उपेन्द्र ठाकुर मोहन, मंत्र नाथ झा 'हंसराज', भीमनाथ झा, गोकुलनाथ झा, दिलीप कुमार सिंह एवं शरदिन्दु कुमार चौधरी' आदि जैसे मैथिल विद्वान शामिल थें।''5

इस काल को मैथिली पत्रकारिता का 'स्वर्ण काल' भी माना जाता है। साप्ताहिक रूप में 'मिथिला मिहिर' ने मैथिल कविताओं, कथाओं, उपन्यास, नाटक, अनुवाद, एकांकी, निबंध, आलोचना आदि विद्याओं में अविस्मणिय योगदान दिया। जहाँ कविता के रूप में इसमें प्रायः सभी विषय के कविताओं ने स्थान पाया, चाहे वह प्रकृति से हो, हास्य से हो या राष्ट्रीय भावना से संबंधित हो, कुछ भी इससे अछुता नहीं था। उस समय 'मिथिला मिहिर' में (1960–1984) 707 कवियों के लगभग 4745 कविताएं प्रकाशित हुई। इसमें शैली, बिम्म–विधान, प्रयोग–धर्मिता, आदि सभी प्रकार की प्रयोगात्मक कविताएं थीं। मैथिली कथा साहित्य में भी इसका योगदान प्रशंसनीय है इसने साहित्यक पत्रिका के रूप में साहित्य के लगभग सभी विद्या चाहे वह लघु कथा, हास्य कथा, सत्य कथा, धार्मिक कथा, पद्य–कथा और रिपोर्ताज हो आदि को स्थान दिया इसने साहित्य के क्षेत्र में जो एक महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जिसे आज तक न तो कोई पत्रिका दोहराह पाई और न ही किसी ने कोशिश की वह है ''इसने दस (10) विदेशी भाषा तथा आठ (8) भारतीय भाशा में लिखित कथा को मैथिली में अनुवादित कर अपने पठकों तक पहुँचाया।''[6] 'मिथिला मिहिर' (साप्ताहिक) ने अपने साढ़े तेइस वर्श के जीवन काल में लगभग 1200 अंक में 626 कथाकारों के 3187 कथा प्रकाशित किया, जो अपने आप में ही एक ऐतिहासिक है। बात अगर उपन्यास के क्षेत्र में इसके योगदान की कि जाए तो अपने साढ़े तेइस वर्श के जीवन काल में विभिन्न विद्वानों के 31 उपन्यास पाठकों तक पहुँचाय, जिसमें प्रमुख उपन्यास हैः 'पृथ्वी पुत्र (ललित), ब्रह्मापिचास (सोमदेव), अगिनबान (जीवनकान्त), कोदो आ कोइला (धीरेन्द्र), निवेदित (सुधांशु 'शेखर' चौधरी), लोहक कंगना (अपूर्ण, श्रीदेव), आदि।

अगर महिलाओं के उत्थान में 'मिथिला मिहिर' की भूमिका की बात कि जाए तो इस क्षेत्र में भी इसने उल्लेखनिय योगदान दिया। इसने मैथिल महिला लेखकों को मिथिली लेखन के विभिन्न क्षेत्रों में आगे आने के लिए सदा ही प्रोत्साहित किया। अपने साढ़े तेइस वर्ष के साप्ताहिक जीवन काल में ''इसने 707 कविओं में से 41 महिला कवित्रियों के कविता का प्रकाशन किया। मैथिली कथा–साहित्य के क्षेत्र में भी 'मिथिला मिहिर' ने महिलाओं को आगे लाया और 626 कथाकारों में से 48 महिला कथाकारों के कहानियों को पाठकों के सामने रखा। इन महिला कथाकारों ने अपनी कथा के माध्यम से मैथिल समाज में महिलाओं की स्थिति और महिलाओं के दर्द से पाठकों को रूबरू कराया। उपन्यास के क्षेत्र में 'मिथिला मिहिर' ने अपने जीवन काल में 31 उपन्यासों में से दो उपन्यास 'चिनगी' (श्रीमती गौरी मिश्र) और 'पटाक्षेप' (श्रीमती लिलीरेक) को छापा। ये दोनों ही उपन्यास सामाजिक समस्या और राजनितिक अंदोलन पर आधारित थें।''[7] 'मिथिला मिहिर' के माध्यम से अनेक महिला निबंधकारों (लगभग 57) ने अनेक विषयों पर निबंध लिखा। 'मिथिला मिहिर' (साप्ताहिक) में 'स्त्रीगण समाज' के नाम से एक नियमित कॉलम निकलता था जो महिलाओं के लेखन को आगे बढ़ाने के लिए ही होती थी।

किसी भी भाषा का विकास एक सर्जनात्मक प्रक्रिया द्वारा ही होता है। जिस समय 'मिथिला मिहिर' (साप्ताहिक) छपना आरंभ हुआ था उसमय मैथिली भाषा की पत्र–पत्रिकाओं की संख्या न के बराबर थी, जिसके कारण नये लेखकों/साहित्यकारों को अपने विचार/कथा लिखने और छपने का मौका नहीं मिल पा रहा था। कोई भी पत्रिका इन नव कथाकारों/साहित्यकारों को छापने का साहस नहीं कर पा रही थी। ऐसी दशा में 'मिथिला मिहिर' ने एक साहसीक कदम उठाया और उसने नव साहित्कारो/लेखकों को छापना आरंभ किया। अनेक प्रतिभवान कथाकारों, गीतकारों, उपन्यासकारों और नाटककारों आदि की प्रतिभा 'मिथिला मिहिर' (साप्ताहिक) के माध्यम से सामने आई। उनमें से कई नव रचनाकार को आज मैथिली के जाने–माने विद्वानों में गिना जाता है।

'मिथिला मिहिर' (साप्ताहिक) ने मैथिली कला–संस्कृति और सामाजिक–आर्थिक क्षेत्र के विकास में भी अविश्मणिय योगदान दिया। मिथिला की मिट्टी सदा से ही अपनी पुजा–पाठ, उपवास, वत्र के लिए जानी जाती हैं। 'मिथिला मिहिर' (साप्ताहिक) ने समय–समय पर विभिन्न निबंधकारों के निबंध से इसे मिथिला एंव मिथिला से बाहर रहने वाले अपने पठकों के सामने लाने का काम किया। इस क्रम में इसने 'श्री कृशणाश्टमी (डॉ. अमरनाथ झा), गायक पिण्डदान (गंगाधर मिश्र), गीत–संगीत (सुधांशु 'शेखर' चौधरी), उपनयन (विद्यापति झा) आदि जैसे निबंध छापे। ''मिथिला मिहिर' (साप्ताहिक) ने मैथिली वैवाहिक समस्या के विविध पक्ष, संस्कार, दहेज, विधवाओं की स्थिति, शिक्षा अभाव, बाल–विवाह आदि सम्बन्धी अनेक रचनाओं को प्रकाशित कर लोगों में जनजागृति का काम किया।''[8]

'मिथिला मिहिर' (साप्ताहिक) ने मैथिली पत्रकारिता में अनेक नवविद्याओं को सम्मलित किया जैसे – ई पत्रिका, जीवनी, साक्षात्कार, वार्त्ता, यात्रा संस्मरण, रिपोर्ताज आदि। इन सभी विद्याओं का मैथिली–पत्रकारिता के क्षेत्र में पहले कभी भी प्रयोग नहीं किया गया था। किन्तु आज इस विद्या का प्रयोग मैथिली की विभिन्न पत्र–पत्रिका खुब कर रही है। मैथिली भाशा हमेशा से ही लोगो के आकर्शण का केन्द्र रही है परन्तु इसकी सबसे बड़ी समस्या इसकी 'वर्त्तनी' को लेकर रही हैं। इस बात से हम सभी अच्छी तरह परिचित है कि लिखने और बोलने की भाशा में कभी भी एकरूपता नहीं होती है, चाहे बात मैथिली की हो या हिंदी भाषा की। मैथिली भाशा के विभिन्न विद्वान हमेशा से ही अपने अनुसार भाषा शैली का प्रयोग किया, जिसके कारण लोगों के बीच एक ही शब्द को ले भी संशय की स्थिति बनी रहती है। लेकिन मिथिला मिहिर ने अपनी भाषा– वर्त्तनी के साथ कभी भी कोई समझाता नहीं की। 'वर्त्तनी' स्तर को लेकर 'मिथिला मिहिर' (साप्ताहिक) ने जो काम किया उसने मैथिली भाषा को दृढ़ता प्रदान की। ''आज मैथिली भाषा में जो लेखन शैली अपनाई जा रही है, वह 'मिथिला मिहिर' (साप्ताहिक) द्वारा दी गई शैली ही है।''[9] 'मिथिला मिहिर' (साप्ताहिक) का मैथिली के विविध क्षेत्रों में योगदान को संख्यात्मक विवरण द्वारा आसानी से समझा जा सकाता है।

सामान्य सर्जनात्मक साहित्य				महिला रचनाकारक विधागत विवरण	
निबंध	5787	निबंधकार	1080		
कविता	4745	कवि	707	कविता के क्षेत्र में	41
कथा	3187	कथाकार	626	निबंध के क्षेत्र में	57
उपन्यास	31	उपन्यासकार	22	कथा के क्षेत्र में	49
नाटक	13	नाटककार	08	उपन्यास के क्षेत्र में	02
एकांकी	97	एकांकीकार	59	नाटक, एकांकी क्षेत्र में	02
कुल	**13859**		**2502**	**कुल**	**152**

बाल–साहित्य विवरण		स्त्रीगण समाजक (स्थायी स्तम्भ) अन्तर्गत	
निबंध	263	निबंध	820
कविता	704	कथा	829
कथा	2096	कविता	154
एकांकी	03	एकांकी	01
उपन्यास	01	अन्यान्य	41
प्रहसन	03	–	–
अन्यान्य	56	–	–
कुल	**3126**	**कुल**	**1845**

(चौधरी शरदिन्दु : मैथिली पत्रकारिता दशा ओ दिशा, ृ. 73)

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि मैथिली पत्रकारिता भले ही 1905 में आरंभ होकर 1960 आते–आते गतिमान हो गई हो पर 1960 में जो 'मिथिला मिहिर' (साप्ताहिक) 'सुधांशु 'शेखर' चौधरी के संपादन में निकला वह काल मैथिली पत्रकारिता का 'स्वर्ण काल' था। कारण 'मिथिला मिहिर' (साप्ताहिक) ने अपने समय–काल में शायद ही कोई ऐसी विद्या/क्षेत्र रही होगी जिसे अपनी लेखनी द्वारा न छुआ हो। मिथिला मीहिर को छोड़कर किसी भी मैथिली पत्रिका 25 वर्शों (वार्शिक/साप्ताहिक) का सफर तय नहीं किया। पाठकों ने भी 'मिथिला मिहिर' को उतने ही प्यार और स्नेह के साथ अपनाया। इसके माध्यम से अनेक उपन्यास, नाटक, शतशः एकांकी, कविताएं, कथा और विविध निबंध आदि के द्वारा अनेक नवलेखकों का मैथिली साहित्य के क्षेत्र में आगमन हुँआ जो आज मैथिली साहित्य/पत्रकारिता में आपनी पहचान बना चुंके हैं।

तात्पर्य यह है कि 'मिथिला मिहिर' ने तो मैथिली पत्रकारिता के क्षेत्र में तो योगदान दिया ही पर 'मिथिला मिहिर' (साप्ताहिक) ने जो योगदान वह अविस्मणी है इसने न केवल मैथिली साहित्य के क्षेत्र में बल्कि मैथिली समाजिक–आर्थिक एवं मैथिली भाशा के विकास में भी अविस्मणिय योगदान दिया। साथ ही इसने मैथिली पत्रिका के संपादन–प्रकाशन एवं वितरण के क्षेत्र में भी अन्य मैथिली पत्रिकाओं के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया। अतः मैथिली के क्षेत्र में इसके योगदान को देखते हुए अगर हम इसे मैथिली भाषा–साहित्य की शीर्श पत्रिका ओर इस काल (1960–1984) को मैथिली पत्रकारिता का स्वर्ण काल कहा जाए तो गलत नहीं होगा।

संदर्भ–

1.खत्री, अयोध्या प्रसाद : स्मारक ग्रंथ, बिहार राष्ट्रभाषा परिशद, पटना, पृ0 253

2.झा, डॉ. योगानन्द : मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष, पृ . 18
3.झा, डॉ. योगानन्द : मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष, पृ.25
4.चौधरी, शरदिन्दु : मैथिली पत्रकारिता दशा ओ दिशा, पृ. 69
5.झा, डॉ. योगानन्द : मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष, पृ. 22
6.भारद्वाज मोहन : मैथिली पत्र–पत्रिका, पृ. 121
7.भारद्वाज मोहन : मैथिली पत्र–पत्रिका, पृ. 126
8.झा, भीमनाथ और संदीप कुमार के बात–चीत पर आधारित
9.भारद्वाज मोहन : मैथिली पत्र–पत्रिका, पृ. 135

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

* International Scientific Journal Consortium Scientific
* OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net